ॐ

26 जनवरी का "संदेश"

26.1.12.
गुरुवार

सभी परमात्माओ को मेरा नमस्कार - - -

विश्व चेतना

जिसे हम "भगवान" कहते है, उसका अपना कोई रूप नही है, रंग नही है, आकार नही है, लेकीन उसकी एक पवीत्र अनुभुती है, वह अनुभुती है, उसके सानीध्य मे अच्छा लगना, बस यही एक मात्र उसकी पहचान होती है, और रही बात "माध्यम" की तो वह "माध्यम" भी समय के अनुसार और अनुरुप बदलते ही रहे है, आप जिस काल मे होगे आपका "माध्यम" भी उसी काल के अनुरुप ही होगा परमात्मा एक अविनाशी शक्ती है, "वह कल भी थी आज भी है, और कल भी रहेगी," याने परमात्मा कोई भी शरीर नही हो सकता है, और शरीरधारी है, तो वह परमात्मा का "माध्यम" हो सकता है, पर परमात्मा नही हो सकता याने "शरीरधारी" परमात्मा का माध्यम है, परमात्मा नही है, याने शरीरधारी के शरीर से परे देखने की आवश्यकता है, अब परमात्मा को देखा भी नही जा सकता तो बस एक ही मार्ग है, अनुभव करना शरीरधारी के शरीर के पिछे बहने वाले चैतन्य की अनुभुती करना याने जो शरीर धारी का शरीर दिख रहा है, उसे आँखो से नही देखना "चित्त" से अनुभव करना कैसा लग रहा है, अब चित्त से अनुभव करने के लिये चाहिये आपका "चित्त" पवीत्र और शुद्ध हो

आपका "चित्त" आपके घर के आयने के समान होता है, आप आपके घर के आयने को सदैव स्वच्छ रखते हो ताकी आप का चेहरा स्पष्ट से स्पष्ट दिख सके लेकिन अपने चित्त" रुपी आयने को स्वच्छ नही करते अगर आप का चित्तरुपी आयना भी स्वच्छ हो तो आप उस चित्त से परमात्मा की अनुभुती कर सकते है, याने शरीरधारी परमात्मा को देखने की नही चित्त से अनुभव करने की बात है, यह बात हमारा शरीर और बुद्धी नही जानती लेकिन हमारी आत्मा जानती है, इसी लिये शरीरधारी परमात्मा के सामने आने पर शरीर की आँखे आत्मा बंद कर देती है, और आत्मा की आँख खुलती है, और यह आत्मा को कहना नही पडता क्योकी शरीर शरीरधारी परमात्मा को भले ही न पहचाने आत्मा पहचानती है, क्योकी आत्मा यह जानती है, की परमात्मा देखने की नही अनुभुती लेने के लिये होता है, इस प्रकार से हम जान सकते है, की शरीरधारी परमात्मा हमारे सामने आने पर आँखे स्वंयम ही बंद हो जाती है, और परमात्मा के सानीध्य मे अच्छा लगता है,

आज हमारी स्थीती ऐसी है, की जो बीस साल पहले एक बच्चा खो गया था उसे हम खोज रहे है, बीस साल पुरानी फोटो को लेकर अरे बाबा अब वह बच्चा बीस साल का युवक हो गया होगा उस युवक की बीस साल पुरानी फोटो से उसे अब पहचाना नही जा सकता है, आज अगर उसे खोजना है, तो उसकी आज की फोटो चाहिये वैसे ही परमात्मा को हम खोज रहे है, हजारो साल की पुरानी फोटो लेकर तो वह कैसे मिलेगा आज भी परमात्मा होगा वह आज के आधुनिक युग के अवतार मे होगा तभी तो वह आज होगा अब प्रश्न है, उसे खोजे तो कैसे खोजे बस एक ही मार्ग है,

वह है, जिस शरीरधारी के सामने जाने से ही आँखे बंद हो जाये और आत्मा की आँख खुल जाये और आत्मा परमात्मा की अनुभुती करने लगे बस तो अब खोज बंन्द करके उस अनुभुती को ही पकड लो. तो आत्मा एक शांन्ती का अनुभव करने लग जायेगी, और फिर अपनी आत्मा को ही "गुरु" बनाओ क्योकी आगे का मार्गदर्शन परमात्मा उसी के माध्यम से करायेगा।

हम समाज मे देखते है, की "सी आयडी पोलीस" आते है, चुपचाप आते है, परिस्थीती की जानकारी प्राप्त करते है, और स्वंयम के आने का एहसास भी किसी को नही होने देते और सारी परिस्थीती का आकलन करके रिपोर्ट देते है, और जब रिपोर्ट आती है, तब हमे पता चलता है, की समाज मे इस स्थान पर पोलीस "बीना ड्रेस" के आये थे और सारी जाँच करके चले गये, और हम इस लीये नही पहचान सके क्योकी वे पोलीस की ड्रेस मे नही थे, हमे पोलीस को पहचान नही सकते और केवल "ड्रेस" को पहचानते है, इसी कारण बीना ड्रेस के पोलीस को समाज पहचान ही नही सका, ठिक इसी प्रकार परमात्मा के माध्यम भी ऐसे ही आते है, उन पर "परमात्मा की ड्रेस" नही होती वे सामान्य मनुष्य के रुप मे आते है, और चले जाते है, और समाज पहचान ही नही पाता इसी लीये परमात्मा के माध्यमो को उनके जिवनकाल के बाद ही जाना जाता है, बीना ड्रेस के पोलीस भले ही ड्रेस पहने न हो तो भी वे भितर से "पोलीस" ही होते है, ठिक उसी प्रकार से परमात्मा के माध्यम परमात्मा का चोला पहने न हो तो भी वे भीतर से "परमात्मा" ही होते है, सीआयडी पोलीस जैसी अपनी पहचान छुपाते है, ठिक उसी प्रकार से परमात्मा के माध्यम भी अपनी पहचान छुपाते है, अब तो बाहरी ड्रेस से बाहरी आवरण से तो पहचाना नही जा सकता पहचाना जा सकता है, तो उनके आभामंडल से उनके ओरा से उनके भितर से बहने

वाले चैतन्य से. वह चैतन्य तो उनके शरीर से सदैव बहते ही रहता है, यही उनकी पहचान है, अब अगर आप की आत्मा पवीत्र हो और चित्त शुद्ध हो तो ही उस चैतन्य को अनुभव कर सकते हो,
या तो दुसरी स्थिती है, आप अती संकर मे हो और उस संकट से बचने का कोई उपाय न हो तो संकट कालीन स्थिती के कारण आपका समर्पण का भाव निर्माण हो जाता है, और वह संकर दुर हो गया इस लीये आप जान पाते हो माध्यम का शरीर तो सामान्य मनुष्य जैसा ही होता है, लेकीन उस शरीर के भितर की आत्मा परमात्मामय होती है, इसी कारण उस आत्मा से लाखो आत्माऐ जुडी होती है, लाखो आत्माओ से वह जुडी होती है, इसी कारण परमात्मा की शक्ती चैतन्य के रुप से उसके शरीर से बहते ही रहती है, उस माध्यम लाखो आत्माऐ समर्पीत होती है, क्योकी प्रथम वह माध्यम की आत्मा लाखो आत्माओ को समर्पीत होती है, इस लीये उसके सानीध्य मे अच्छा लगता है, और उसके सानीध्य मे हमारे शरीर पर हमारी आत्मा का नियंत्रण हो जाता है, इस लीये शरीर की आँखे बंद हो जाती है, और चित्त रुपी आत्मा की आँखे खुल जाती है, और हम उसके सानीध्य को देखना बंद करके अनुभव करना प्रांरभ कर देते है,
बचपन से ही हम जो भी चिज देखते है, उस चिज की छबी हमारे चित्त रुपी स्टोर मे जमा हो जाती है, और कोइ बुरी घटना देखी तो उसका बुरा प्रभाव हमारे चित्त पर पडता है, और उसी घटना को जब हम बार२ याद करते है, तो हम ही हमारे पैर पर कुल्हाडी मारने वाली बात करते है, क्योकी हम याद करके उस प्रभाव को ही बढा रहे है, और घटना एक बार घटी लेकीन हम चित्त से याद करके के बार२ घटीत करते है,

प्रत्येक के जिवन मे अच्छी भी घटनाऐ घटती है, और बुरी भी घटनाऐ घटती है, आप जिस घटना को याद करते है, उस घटना का प्रभाव हमारे चित्त मे बढता है, अगर बुरी घटनाओ का प्रभाव बढा तो हमारी मानसीक स्थिती खराब हो जाती है,
एक बडी रेखा है, और एक छोटी रेखा है, और बडी रेखा को काटे बिना अगर उसे छोटी करना हो तो एक ही रास्ता है, छोटी रेखा को ही इतनी बडी कर दो की बडी रेखा छोटी लगने लग जाये, और यह करना आप के ही हाथ मे है, आप सदैव आपके जिवन मे घटी अच्छी घटनाओ याद करो और उन्हे शृद्धीगत करो तो आप देखोगे आप का चित्त शुद्ध होना प्रांरभ होगा, आपके आसपास कैसा वातावरण है, आपके आसपास अगर अच्छी बाते याद करने वाले है, तो चित्त सशक्त होगा अगर आपके आसपास बुरी घटनाऐ याद करने वाले है, तो आपका चित्त अशक्त होगा, इसी लीये अच्छी संगत मे ही रहो,
आज समाज मे फिल्मे, और टी.वी. का प्रभाव बढ रहा है, जो दृष्य बच्चो के जिवन मे आये ही नही वे भी उनके पास इन माध्यमो से आ रहे है, ऐसे समय बच्चो को समय देने की आवश्यकता है, जन्म से किसी का चित्त खराब नही होता है, छोटे बच्चो का चित्त सफेद खाली निरवालस पवीत्र कागज जैसा होता है, और बच्चे के जिवन के बारा साल महत्वपुर्ण है, इन वर्षो मे जो भी उनके चित्त मे स्टोर हो जाता है, वह जिवनभर रहता ही है, क्योकी वह घटनाऐ अधीक पुरानी होने से अधीक प्रभाव डालती है, इन सबसे बचने का एक ही उपाय है, बच्चो को उनके बचपन की बाते बार २ बताओ, और अच्छी घटनाओ को याद करो,

कुछ नहीं उनसे बाते करते बैठो उन्हे याद दिलाओ की हम कैसे केरल के दौरे पर गये थे, हमने कन्याकुमारी मे कितना अच्छा सुर्योदय देखा था, वहाँ पर हमने जो डांन्स देखा वह कितना अच्छा. उस विवेकानंद स्मारक मे गये कितना अच्छा वह था चैतन्य था, समुद्र कितना स्वच्छ था उस समुद्र मे नहाकर तुम्हे कितना आंनद आया. उस दिन तुमने जो ड्रेस पहनी थी वह कितनी अच्छी तुम्हे लग रही थी, उस यात्रा मे हमारी बस कितनी आरामदायक थी, ड्रायव्हर भी कितना भला आदमी था, हमने कितने सुंदर चाय के बागान देखे, वह एक स्वामीजी मिले थे, उनके सानीध्य मे हमे कितना अच्छा लगा था, उन स्वामीजी तुझे एक अमरूद भी दिया था, कोचीन मे सुर्यास्त कितना सुन्दर लगा था, उस दौरे मे तुम कितने व्यवस्थीत रहे थे. कुछ नही ऐसी छोटी छोटी बाते करके के भी बच्चो का चित्त अच्छी बातो पर ले आया जाता है, सैदेव निसर्ग, संगीत, गायन, अन्न, सदगुरु, समुद्र, सुर्य, बगीचे, फुल, यह सब विषय मनुष्य को आंनद की अनुभुती कराते है, दुसरा है, बचपन की मधुर यादे मनुष्य के चित्त को शुद्ध करती है, यही सब बाते परमात्मा के माध्यम के सामने जाने मात्र से स्वंयम ही हो जाती है, माध्यम के सानिध्य मे पहुच कर मनुष्य अपने बचपन मे पहुच जाता है, और स्वंयम को एक बच्चा समझने लग जाता है, कई साधक तो बच्चो जैसी हरकते भी करने लग जाते है, यह सब चित्तशुद्धी का ही प्रकार है सैदेव अच्छी संगत मे तो नही रहा जा सकता इस लिये चित्त से सदगुरु की संगत मे रहे और इसका सैदेव एहसास रखे की सदगुरु मेरे ही पास बैठे है, मेरे ही पास खडे है, मुझे ही देख रहे है वास्तव मे ऐसा ही है, मैं तुम्हारे एकदम करीब रहता हूँ, पर तुम मेरे करीब नही होते हो.

उस एहसास को अनुभव करो. जो शरीर से आप कीस के संग हो उससे कोई फरक नही पडता - है मै यह सब कर रहा हुँ। इसलीये इस पर विश्वास मत रखो आप स्वंयम अनुभव कर के देखो, केवल गुरु ने कहा है। इसलीये विश्वास करना या परम्परा से ऐसा ही है। ऐसा विश्वास करना कभी शाश्वत स्वरुप का नही होता आप केवल अपने आत्मा को गुरु बनाओ और वह क्या अनुभुती कर रहा है, वह देखो और उसी आत्मा पर विश्वास करो,

जिस प्रकार से प्रत्येक बीज मे वृक्ष बनने की संभावना छुपी हुयी होती है, लेकीन यह भी सच है, की प्रत्येक बिज से वृक्ष निर्माण नही होता है, यह भी सही है, और वह भी सही है। इन दोनो परीस्थीतीयो के बीच है। बीज को वृक्ष बनने देने के लिये उपयुक्त वातावरण इस वातावरण पर ही निर्भर होता है, बीज से वृक्ष का निर्माण होगा या नही इसलीये आपके भितर भी आध्यात्मीक प्रगती के वृक्ष की संभावना होती है, बस आवश्यकता है। उपयुक्त वातावरण देने की और उपयुक्त वातावरण मीलता है। उपयुक्त सामुहीकता से क्योकी समाज मे रह कर "आध्यात्मीक प्रगती" तो केवल सामुहीक प्रयास से ही संभव आप इस सामुहीक प्रयास का महत्व समझे और सामुहीकता के वातावरण मे अपने आध्यात्मीक बीज का वृक्ष बनाये यही प्रभु से प्रार्थना है। आप सभी को "गणतंत्र दिवस" की शुभकामनाऐ, आप सभी आत्माओ को खुब खुब आशीर्वाद

आपका

बाबा स्वामी

26/1/2012